

विचार बिन्दु

मौन वार्तालाप की एक महान कला है। —हैज़लट

बजट सामूहिक उत्तरदायित्व में घोषणाएं व्यक्तिगत नहीं होती!

राजस्थान विधान सभा में पिछले हफ्ते राज्य का वर्ष 20२६–२७ का बजट प्रस्तुत किया गया। उसके प्रावधानों तथा उसमें किए गये प्रस्तावों व घोषणाओं पर राजनीतिक और मीडिया के अलावा कारोबारी जगत की फ़ौरी टिप्पणियां आ चुकी हैं। विपक्ष के लिए वह किसी काम का नहीं है,और सत्तारूढ़ दल के लिए वह सर्वश्रेष्ठ है। मगर इस बजट भाषण में वित्तीय आंकड़ों और प्रस्तावों से कुछ इतर भी झलकता है। पिछले कुछ समय से एक नई प्रवृति देखने को मिल रही है जिसमें बजट भाषण सामूहिक दायित्व की जगह व्यक्तिगत होता जा रहा है। यह प्रवृति इस बार सिर चढ़ कर बोलती नजर आई, जिसमें सामूहिक निर्णय को व्यक्तिगत नेतृत्व के प्रचार में बदले जाने की कवायद भी थी। बजट को अब पाटी की नहीं,व्यक्तिगत उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा है। राजस्थान की वित्त मंत्री जब अपने बजट भाषण में बार–बार मुख्यमंत्री का गुणगान करती है और सदन में चारों ओर नजर घुमा कर कहती है कि मैं घोषणा करती हूं, तब प्रश्न विधिक नहीं, राजनीतिक शिष्टाचार और संवैधानिक संस्कृति का बन जाता है। बजट व्यक्ति का नहीं, सरकार का दस्तावेज होता है जिसे विभागीय स्तर पर तैयार किया जाता है, मंत्रिपरिषद् द्वारा अनुमोदित किया जाता है, और अंततः सदन द्वारा पारित किया जाता है। ऐसी स्थिति में 'मैं घोषणा करती हूं' का प्रयोग एक प्रकार से व्यक्तिगत स्वामित्व का संकेत देता हुआ प्रतीत होता है, भले ही विधिक रूप से ऐसा न हो। बहुतेरे यह भाषा संसदीय गरिमा और लोकतांत्रिक नैतिकता के विरुद्ध लग सकती है। मैं के का यह चलन महलों से आने वाली वसुंधरा राजे तथा कांग्रेस के अशोक गहलोत ने शुरू किया था। विधान सभा में बजट भाषण केवल आय–व्यय का विवरण नहीं होता; वह सरकार की नीतिगत दिशा, प्राथमिकताओं और वैचारिक प्रतिबद्धताओं का औपचारिक वक्तव्य होता है। ऐसे में जब वित्त मंत्री बार–बार यह कहे 'मैं घोषणा करती हूं' तो यह प्रश्न स्वाभाविक ही पूछा जा सकता है कि क्या यह भाषा संसदीय परंपरा और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना के अनुरूप है? यह भाषा की समस्या नहीं है। समस्या भाव में है। यदि बजट भाषण में बार–बार मैं की प्रधानता हो और सरकार या मंत्रिपरिषद् की सामूहिकता गौण हो जाए, तो यह लोकतांत्रिक संस्कृति के लिए चिंता का विषय हो सकता है। क्योंकि लोकतंत्र में नीतियां व्यक्तिगत की नहीं, संस्थाओं की होती हैं। उत्तरदायित्व साझा होता है, उपलब्धि भी साझा होनी चाहिए। इसलिए सिद्धांततः यह कहना अधिक उपयुक्त माना जाता है कि – सरकार यह घोषणा करती है या राज्य सरकार प्रस्ताव करती है। माना जाता है कि बजट भाषण वित्तीय आंकड़ों के साथ राज्य के आर्थिक हालात को सदन में सामने रखता है और सरकार की लोक कल्याण की नीतियों व कार्यक्रमों की जानकारी देता है। वह राजकोष में आने व उससे खर्च होने वाले पैसों का हिसाब–किताब प्रस्तुत करता है तथा एक–एक पाई खर्च करने की सदन से अनुमति लेता है। भले ही बजट बहुमत के बल से पास होता है, फिर भी यह संवैधानिक व्यवस्था राज्य और प्रशासन को एक मर्यादा में बांधे रखती है। भारतीय संसदीय शासन प्रणाली की मूल आत्मा सामूहिक मंत्रिपरिषद् उत्तरदायित्व की है। भारत के संविधान के अनुच्छेद १६४ के अनुसार मंत्रीपरिषद् विधान सभा के प्रति सामूहिक रूप से उत्तरदायी होती है। इसका अर्थ है कि कोई भी नीति, योजना या वित्तीय प्रस्ताव किसी एक मंत्री की व्यक्तिगत सोच नहीं, बल्कि पूरी सरकार के विचार–विशेष और स्वीकृति का परिणाम होता है। वह पूरी मंत्रिपरिषद् द्वारा स्वीकृत दस्तावेज होता है, जो अंततः सदन द्वारा पारित होकर ही प्रभावी बनता है।

ब्रिटन की संसद में चांसलर ऑफ़ द एक्स्पेचेकर आई प्रपोज या आई अनाउन्स जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। लेकिन वहां अब भी राज्य सत्ता राजा या रानी में निहित है भले ही वह अलंकारिक हो। मगर भारत का संविधान यहां की सत्ता नागरिकों के हाथ में देता है। इसीलिए व्यक्तिगत नेतृत्व की छवि गढ़ने के लिए संसदीय मंच का प्रयोग मर्यादित होना चाहिए। लोकतंत्र में संस्थाओं की प्रतिष्ठा व्यक्ति से ऊपर मानी जाती है। यदि बजट को व्यक्तिगत घोषणा–पत्र की तरह प्रस्तुत किया जाने लगे, तो इससे संस्थागत संतुलन कमजोर पड़ सकता है। वित्त मंत्री सरकार के अधिकृत प्रतिनिधि के रूप में बोलते हैं। किन्तु लोकतांत्रिक परिपक्वता की कसौटी केवल वैधानिकता नहीं, बल्कि संवैधानिक शिष्टाचार और राजनीतिक संस्कृति भी होते हैं। यदि भाषा

सार्वजनिक जीवन में आलोचना को व्यक्तिगत अपमान मान लेना या सत्ता-सम्पन्न व्यक्ति के प्रति प्रश्न उठाने को ‘अवज्ञा’ समझना लोकतांत्रिक नहीं, सामंती प्रवृत्तियां हैं। जब लोग व्यक्तिगत करिश्मे को संस्थागत प्रक्रियाओं से ऊपर रखने लगते हैं तब संस्थाओं पर अविश्वास होने लगता है। आलोचना का दमन होता है और असहमति को देश-विरोध या सामाजिक विद्रोह करार दिया जाने लगता है और वंश या पद के आधार पर विशेषाधिकार को नैसर्गिक मान लिया जाता है।

उसके अग्रिम रहने वाले लोग प्रजा कहलाते हैं। नागरिक शब्द लोकतंत्र से संबंधित है। औपचार्य मानी जाती है और उसके सदस्य नागरिक कहलाते हैं। अधिकारों की दृष्टि सेप्रजा के अधिकार सीमित होते थे। राजा की इच्छा ही सर्वोपरि होती है। कर्तव्यों की दृष्टि से प्रजा का मुख्य कर्तव्य राजा के आदेशों की पालना करना होता है। बजट भाषण में जिस उक्ति का उपयोग किया गया वह तब की है जब प्रजा और शासक का संबंध अधीनता का था। गणतांत्रिक भारत में नागरिक और राज्य का संबंध सहभागिता और समानता का है। नागरिक शासन–निर्माण में भाग लेता है और अपने भाग्य का खुद निवृत्ता होता है। दोनों में भावनात्मक और वैचारिक अंतर है। प्रजा शब्द में दासता या अधीनता का भाव निहित रहता है जबकि नागरिक शब्द में गरिमा, अधिकार और जिम्मेदारी का भाव समाहित होता है। इसलिए प्रजा वह है जो राजा के अधीन रहती है, जबकि नागरिक वह है जो लोकतांत्रिक राज्य का समान अधिकारों वाला सदस्य होता है। आधुनिक भारत में हम प्रजा नहीं, बल्कि संविधान द्वारा संरक्षित अधिकारों से युक्त नागरिक हैं। हम भारत के लोगों ने संविधान के माध्यम से स्वयं को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया। संविधान ने व्यक्ति की गरिमा, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व को राष्ट्र–जीवन की आधारशिला बनाया। परंतु संविधान की औपचारिक स्थापना और उसके मूल्यों का सामाजिक अल्पसंख्य–दो अलग प्रक्रियाएं हैं। यही वह अंतराल है जहां सामंती मानसिकता बार–बार सिर उठाती दिखाई देती है। समाज में उपरती अहंकारी सामंती प्रवृत्तियां अक्सर सहाे पर मामूली सांस्कृतिक या व्यवहारगत विचलन के रूप में दिखाई देती हैं, जैसे भाषा में दंभ, पद और वंश का अनावश्यक प्रदर्शन, सत्ता के प्रति अंध–निष्ठा, या सामाजिक श्रेणियों के आधार पर श्रेष्ठता–बोधा किंतु इतिहास साक्षी है कि ऐसी प्रवृत्तियां धीरे–धीरे सामूहिक मानस में गहराई तक पैठ जाती हैं और अंततः लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए चुनौती बन जाती हैं। सामंतवाद केवल आर्थिक या राजनीतिक संरचना नहीं, बल्कि एक मानसिक संरचना भी होती है। इसमें व्यक्ति अपनी पहचान को जन्म, वंश, पद या शक्ति से जोड़कर देखता है। आधुनिक लोकतंत्र इसके विपरीत नागरिकता–आधारित समानता पर टिका होता है। अहंकारी सामंती प्रवृत्तियां अक्सर प्रतीकों के माध्यम से पुनर्जीवित होती हैं जैसे उपाधियों का प्रदर्शन, शक्ति का सर्वाजनिक प्रदर्शन, सामाजिक दूरियां या यह विश्वास कि कुछ लोग स्वभावतः शासक और अन्य स्वभावतः शासित हैं। ये प्रवृत्तियां लोकतांत्रिक संवाद की जगह अनुशासन और अधीनता को महत्व देती हैं। भारत का लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र माना जाता है, परंतु लोकतांत्रिक संस्कार अभी भी समाज के हर स्तर तक समान रूप से नहीं पहुंचे हैं। चुनावी प्रक्रिया में भागीदारी बढ़ी है, पर लोकतांत्रिक चेतना–अर्थात असहमति को स्वीकार करना, आलोचना को स्थान देना, और संस्थाओं का सम्मान करना–अब भी संभट में है।जब व्यक्ति लोकतंत्र को केवल मतदान तक सीमित समझता है और रोज़मर्रा के व्यवहार में समानता व संवेदनशीलता को नहीं अपनाता, तब सामंती सोच पुनः सक्रिय हो जाती है। सार्वजनिक जीवन में आलोचना को व्यक्तिगत अपमान मान लेना या सत्ता–सम्पन्न व्यक्ति के प्रति प्रश्न उठाने को ‘अवज्ञा’ समझना लोकतांत्रिक नहीं, सामंती प्रवृत्तियां हैं। जब लोग व्यक्तिगत करिश्मे को संस्थागत प्रक्रियाओं से ऊपर रखने लगते हैं तब संस्थाओं पर अविश्वास होने लगता है। आलोचना का दमन होता है और असहमति को देश–विरोध या सामाजिक विद्रोह करार दिया जाने लगता है और वंश या पद के आधार पर विशेषाधिकार को नैसर्गिक मान लिया जाता है। ये संकेत बताते हैं कि लोकतंत्र केवल संविधान में सुरक्षित नहीं रह सकता, उसे समाज के व्यवहार में भी सुरक्षित रखना होता है। मानवीय गरिमा का सम्मान तभी बना रह सकता है जब सामाजिक व राजनीतिक नेतृत्व प्रतीकात्मक सामंती प्रदर्शन से बचे और सादरता व जवाबदेही को अपनाये। भारत में जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र और वर्ग के आधार पर नई–नई पहचानों का उभार होता नजर आता है। पहचान का उभार सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक भी बन सकता है, किंतु जब यह प्रवृति मानवीय मूल्यों से ऊपर उठकर राजनीतिक वर्चस्व का माध्यम बन जाती है, तब वह विभाजनकारी भी हो जाती है।

—**अतिथि संपादक,**
राजेन्द्र बोड़ा
(**वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक**)

	
राशिफल	
बुधवार १८ फरवरी, २०२६	
फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् २०८२, शतभिषा नक्षत्र रात्रि ९:१६ तक, शिव योग रात्रि १०:४५ तक, बव करण सायं ४:५८ तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।	
गृह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मकर, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-कुम्भ, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह	
आज सायन मीन में सूर्य प्रवेश रात्रि ९:२२ पर करेगा। आज चन्द्र दर्शन दक्षिण श्रृंगोन्ति, पंचक है। आज से बसन्त ऋतु आरम्भ होगी।	
श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से ९:५३ तक, शुभ ११:१७ से १२:४१ तक, चर ३:२९ से ४:५३ तक, लाभ ४:५३ से सूर्यास्त तक।	
राहूकाल: १२:०० से १:३० तक। सूर्योदय ७:०५, सूर्यास्त ६:१६	

उचित मूल्य के अभाव में तरक्की से दूर किसान

कृषि विकास का एक दशक.....



पंकज मीणा

देश में कुछ क्षण ऐसे भी आए जब प्याज की बढ़ती कीमतों से सरकारें अस्थिर हो जाती थीं अथवा टमाटर, लहसुन का आम आदमी की पहुंच से दूर होने के नाम पर राजनीति होती थी। शहरों के नजदीक का किसान बाजार आसानी से उपलब्ध होने के कारण सब्जी की खेती की और आकर्षित होता है, आसानी से बाजार उपलब्धता के अलावा तुरंत नकदी हाथ में आना भी प्रमुख कारण है। जहां सब्जी की खेती करने से तुलनात्मक लाभ अधिक होता

राष्ट्रीय गीत का सम्मान भारत के संविधान के प्रति आभार जताना है



सूर्य प्रताप सिंह राजावत

यूनियन ऑफ़ इंडिया के गृह मंत्रालय के एजीक्यूटिव ऑर्डर में राष्ट्रीय गीत यानी वंदे मातरम के लिए गाइडलाइन तय की गई हैं। एजीक्यूटिव ऑर्डर चार हिस्सों में बंटा हुआ है। पहला, वंदे मातरम का आधिकारिक वर्शन, दूसरा, ग्रुप में या मिलकर राष्ट्रीय गीत गाना या बजाना। और आखिरी में दर्शकों की यह जिम्मेदारी है कि वे राष्ट्रीय गीत बजाते या गाते समय सावधान खड़े रहें। मीडिया में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड द्वारा यह गलत जानकारी फैलाने की कोशिश कर रहा है कि इस ऑर्डर में राष्ट्रीय गीत गाना जरूरी है। जबकि तथ्य यह है कि यह राष्ट्र गीत– वंदे मातरम के गायन या वादन के दौरान सावधान खड़े रहने का कर्तव्य निर्धारित करता है। दिशानिर्देशों का विरोध करने वाले लोगों द्वारा यह भी प्रयास किया गया है कि इसका उल्लेख राष्ट्रीय सम्मान अपमान निवारण अधिनियम, १९७१ में नहीं है। अधिनियम, १९७१ को ध्यानपूर्वक पढ़ने पर, धारा ३ में स्पष्ट रूप से राष्ट्रगान गायन आदि का उल्लेख है।

धारा ३. भारतीय राष्ट्रगान गायन आदि की रोकथाम – जो कोई भी जानबूझकर भारतीय राष्ट्रगान के गायन को रोकता है या ऐसे गायन में लगे किसी भी सभा में व्यवधान पैदा करता है, उसे तीन साल तक की अवधि के कारावास या जुर्माने या दोनों से दंडित

किया जाएगा।

धारा ३ के शीर्षक को केवल २४ जनवरी, १९५० की संविधान सभा की बहस की कार्यवाही पर ध्यान देकर ही समझा जा सकता है, यह ऐतिहासिक फैसला जन गण मन और वंदे मातरम के दर्जे की साफ़ समझ और तारीफ़ का आधार और बुनियाद है।२४ जनवरी १९५० को संविधान सभा के प्रेसिडेंट डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने यह बयान दिया था, जिसे राष्ट्रगान और राष्ट्रीय पर आखिरी फैसले के तौर पर भी अपनाया गया:–

...जन गण मन के नाम से जाने जाने वाले शब्दों और संगीत से बनी रचना भारत का राष्ट्रगान है, जिसमें ज़रूरत पड़ने पर सरकार जो भी बदलाव करने की इजाजत दे सकती है, उसके अधीन है, और वंदे मातरम गीत, जिसने भारतीय आजादी की लड़ाई में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है, उसे जन गण मन के बराबर सम्मान दिया जाएगा और उसके बराबर दर्जा दिया जाएगा।

यह बात कि राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम पर कोई कानूनी नियम नहीं है, गलत, बेतुकी और गुमराह करने वाली है। यह बात हो सकती है कि १९७१ में राष्ट्रीय गीत का साफ़ तौर पर जिक्र नहीं है। एक १९७१ के सेक्शन तीन की हेडिंग में इस्तेमाल किया गया शब्द आदि मतलब निकालने के लिए कानूनी तरीकों की ज़रूरत है। इस विषय पर गाइड करने के लिए एजुडेड जेनेरिस का सिद्धांत लॉजिकल नतीजे को समझने में मदद करता है

दूसरा तर्क यह है कि आर्टिकल १९ में इस बात के लिए युक्तायुक्त पाबंदियां हैं कि युक्तायुक्त पाबंदियां कानून के तौर पर लगाई जा सकती हैं, न कि एजीक्यूटिव ऑर्डर से, यह खड़क सिंह केस में तय किया गया था। राष्ट्र गीत कानूनी ज़रूरत को पूरा करते हैं, क्योंकि अधिनियम १९७१। राष्ट्रगान को कानूनी सुरक्षा देता है और आदि

बूंदी में अस्तित्व खो रहा है एकमुखी शिवलिंग वाला दो हजार साल पुराना मंदिर

सर्वेक्षण के बावजूद पुरातत्व विभाग ने प्राचीन शिवमंदिर की सुध नहीं ली

बूंदी, (निर्सं।) क्षेत्र के प्रसिद्ध प्राकृतिक एवं पौराणिक धार्मिक आस्था स्थल भीमलत महादेव के निकट शिव मंदिर मलबे में तब्दील हो गया है तथा कलात्मक एक मुखी शिवलिंग खण्डित अवस्था में है। इस शिवलिंग पर शिव की ध्यान योग मुद्रा में सुंदर प्रतिमा उत्कीर्ण है।

लंबे समय से इस मंदिर के खंडित शिवलिंग की पुनर्स्थापना एवं जीर्णोद्धार के लिए भारतीय पुरातत्व विभाग को

अवगत कराया गया था, लेकिन किसी ने इस कार्य में गंभीरता नहीं दिखाई। इस ध्वस्त शिवालय एवं खण्डित आरामकद एकमुखी शिवलिंग के कारण इस स्थान का नाम खंडेरिया पड़ा। यहां पर एक छोटी बस्ती भी है, जिसका नाम भी इसी मंदिर के कारण खंडेरिया है। मंदिर का निर्माण गोलाकार में हुआ था और आशंका जताई जा रही है कि इसे विदेशी आक्रांताओं ने ध्वस्त किया होगा। इस शिवलिंग व शिवालय के

■ **भीमलत महादेव के निकट शिव मंदिर मलबे में तब्दील हो गया है**

अध्ययन के लिए पुरातत्व विभाग से वैज्ञानिक उत्खनन की मांग की गई थी और भारतीय पुरातत्व विभाग के गोविन्द मल्ल व मनोज द्विवेदी ने इस शिवालय का अवलोकन भी किया था। इसकी बड़े आकार की ईंटों के आधार

पर इसे १८०० से २२०० साल के बीच में निर्मित होने की संभावना है। पुरातत्व विभाग यहां के कलात्मक खण्डित शिवलिंग को किसी म्यूजियम में रखने के लिए ले जाना चाहता था, लेकिन स्थानीय लोगों व पुरातत्व से जुड़े लोगों ने इसका विरोध किया, जिससे शिवलिंग उसी हालत में है। पुरातत्व विभाग को टीम के सर्वे से उम्मीद थी कि जिले की इस महत्वपूर्ण पुरा संपदा का संरक्षण एवं

			
सिंह	परिवार	अपसी	कथा
	सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।	अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।	विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शेष संदेश प्राप्त होेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।
कुंभ	मानसिक तनाव दूर होने लगेगा। मन:स्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।	विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शेष संदेश प्राप्त होेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।
मीन	घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अंगणल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगी।		

सुविधा, तकनीक और किसान की मेहनत में कोई कमी नहीं है, इसलिए उत्पादन और उत्पादकता में बढ़ोतरी हुई है। परंतु अंतिम भाग फसल को बाजार में बेचकर उचित मूल्य को प्राप्त करने में किसान पिछड़ रहा है, तैयार उपज का उचित मूल्य प्राप्त करने में यहां परिवहन, मंडी/बाजार में महत्वपूर्ण कारक तो वहीं तैयार फसल (फल/सब्जी) का परिरक्षण भी एक बड़ी समस्या है। भारत में परीरक्षण के अभाव में ४०–६० प्रतिशत फसल ही थाली तक पहुंचती है, सरकार किसान की फसल बिक्री की कोई मजबूत व्यवस्था तैयार करें जिससे किसान की बिक्री मूल्य और उपभोक्ता के खरीद मूल्य में ज्यादा अंतर न हो। साथ ही जल्द खराब होने वाली फसलों के परीरक्षण के लिए सरकार उद्योग स्थापित करने हेतु निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करे तो निश्चित ही फल सब्जी उत्पादक किसान के जीवन में सुखद बदलाव देखने को मिलेगा।

—**पंकज मीणा,**
प्रदेश प्रवक्ता, भाजपा

नौखाली दंगों का जिक्र है, जो याद दिलाता है कि भारत को बांटने की आगे की सभी कोशिशों को शुरू में ही खत्म कर देना चाहिए। और उसे संविधान की कैलिग्राफी कॉपी में भारत का विवरण मद्धर इंडिया – भारत माता के रूप में है, जिसका मतलब है कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस और दूसरे फ्रीडम फाइटर्स भारत माता को आजाद कराने के लिए भारत के बाहर से लड़ रहे थे (हिंदी में भारत माता), नेताजी बोस को दिखाने वाले इलस्ट्रेशन का विवरण है। इसलिए वंदे मातरम भारत माता की प्रशंसा, स्तुति है। यहीनहींभारत को आजादी मिलने पर आधी रात को कॉन्स्टिट्यूटेंट असेंबली की प्रोसिडिंग्स में बताया गया है कि पहला एजेंडा सुचेता कृपलानी द्वारा वंदे मातरम का गायन था।

राष्ट्रगान बजाते या गाते समय सावधान की मुद्रा में खड़े होनेकेविषय पर दुनिया का नजरिया १९८७ में ७६ (एए) ७४८ बिजो इमैनुएल और अन्य, अपोलेंट बनाम केरल राज्य और अन्य, रेस्पोंडेंट में भी बताया गया है। डोनाल्ड बनाम हैमिल्टन बोर्ड एजुकेशन, (१९४५ ऑटारियो) में झंडे को सलामी देने और राष्ट्रगान गाे पर आपत्ति के एक मामले में, जस्टिस गिल्लर्डस ने कहा :

“... मेरे लिए, झंडे को सलामी देने या राष्ट्रगान गाने का आदेश किसी भी जबरदस्ती किए गए धार्मिक काम में शामिल न होने का आदेश होगा, बल्कि, सही नज़रिए से देखा जाए तो, एक उलटे सिद्धांत के सम्मान में शामिल होना होगा, यानी, एक ऐसे देश और राष्ट्र का सम्मान करना जो धार्मिक आजादी के लिए खड़ा है, और यह सिद्धांत कि लोग अपनी मर्जी से पूजा कर सकते हैं, या बिल्कुल नहीं कर सकते।”

—**सूर्य प्रताप सिंह राजावत,**
अधिवक्ता राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर